रात्रि क्लास 21/11/68 ओमशांति " विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है? " जैसे सन्यासी होते हैं तो ऐसे नहीं कि उन्हों को घर–बार भूल जाता है। याद रहता है; परंतु उनसे ममत्व मिटा देते हैं। मनुष्य भूलता कुछ भी नहीं है। बाकी ममत्व नहीं। ममत्व एक बाप से रखना है। तुमको 32वर्ष हुये हैं तो भी एक भी उस अवस्था में नहीं है जो सभी भूल जाये। कुछ न कुछ याद पड़ता है। देह को भी भूलना है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है, टाइम लगता है। वह समय जब आवेगा तब कर्मातीत अवस्था को पावेंगे। अभी कोई ने पाया नहीं है। वह अवस्था हो जाये फिर तो विनाश भी शुरू हो जाये। सन्यासी भी पुरुषार्थ करते रहते हैं। उनको तो फिर भी इस पुरानी दुनिया में ही आना है। तुमको तो पुरानी दुनिया में आना न है। इसलिए नई दुनिया सुखधाम को याद करना है। वाया शांतिधाम जाना है। फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार आवेंगे। हिसाब करें तो 500करोड़ एक्टर्स हैं। आत्मा एक्टर्स हैं ना, जो शरीर द्वारा एक्ट करती हैं। इसमें भी तुम हीरो–हीरोइन हो। यथा माँ–बाप तथा बच्चे। तुम बेहद के राज्य पाते हो। हीरे जैसा जन्म यह है, ल०ना० का नहीं। यह तुम्हारा हीरे जैसा जन्म है; क्योंकि तुम ईश्वरीय संतान हो। फिर दैवी संतान बनेंगे। इस समय जीत पाने लिए तुम बच्चों की युद्ध चालू है। यह ज्ञान हर एक की बुद्धि में रहना चाहिए। अभी हमको जाना है। कलियुगी संबंध सभी मिट जाना है। अभी है पुरुषोत्तम संगमयुग, जबकि कलियुगी बंधन टूटना है। फिर सतयुगी संबंध में जाना है। तो बाप, घर और सुखधाम याद आते हैं। बुद्धि में ज्ञान है, सन्यासी मुक्ति के लिए कितना धक्का खाते हैं। जाता कोई भी नहीं। जाने का सभी का समय अभी है। सन्यासी आदि भी तुमसे नॉलेज लेंगे। उनको पता पड़ेगा ज्ञान सागर बाप एक ही है, उनसे ही ब्रह्माकुमारियों ने ज्ञान लिया है। आजकल छोटेपन से ही लेकर गुरु करते हैं; क्योंकि इस समय सभी वानप्रस्थी हैं। तो छोटे बच्चों को भी कहा जाता है शिवबाबा को याद करो। नई दुनिया में जाना है, इस समय सभी की वानप्रस्थ अवस्था है। जितना हो सके यह पढ़ाई पढ़नी है; परंतु शरीर निर्वाह लिए वह पढ़ाई भी पढ़नी है। सभी को यहाँ रहने का फ्रीडम (स्वतंत्रता, छुट्टी) भी नहीं दे सकते। मकान बनाया जाता है। समझा जाता है बहुत ही बनते रहेंगे। बाप के बच्चे वृद्धि को पाते हैं। बहू आती है तो फिर घर अलग करना पड़े। इकट्ठे रह न सके। सतयुग में तो सभी चीज़ें नई सतोप्रधान होती हैं। बच्चियाँ सोमीरस भी जाकर पीती थीं। यह सभी है साक्षात्कार। समझते हैं जैसे कि पिया। स्वाद ऐसा

आता है। तो वह भी सन्यास, वह भी सन्यास है। सन्यास वा त्याग बात एक ही है। ड्रामा अनुसार उनका हद का सन्यास है। पुरानी दुनिया में रहते हैं। तुम अभी संगम पर हो। तुमको कलियुग में नहीं कहेंगे। संगमयुग होता ही ब्राह्मणों का है। शूद्र सो फिर देवता। यह ब्राह्मणों का युग बहुत थोड़े टाइम का होता है। 50वर्ष कहेंगे। 50वर्ष गुजरने में देरी नहीं लगती है, और यह एक जन्म का ही युग होता है। यह बहुत ही खुशी का युग है। खुशी किसमें है? भगवान बाप हमको पढ़ाते हैं। स्टूडेंट को कितनी खुशी होनी चाहिए; परंतु माया तूफान में लाती है। इसलिए इतनी खुशी नहीं रहती है। भगवान तो एक ही निराकार है। वह जन्म–मरण में आता नहीं। तुमको उठते–बैठते–चलते नशा रहना चाहिए, जब तक स्थापना हो जाये, पीछे भी याद रहता है। यह है तुम सभी का अंतिम जन्म। सभी की वानप्रस्थ अवस्था है। छोटे बच्चे को भी यह शिक्षा देनी चाहिए। एक दिन आवेगा जो टीचर्स को डायरैक्शन मिलेगा। सभी को कहेंगे कैरेक्टर्स सुधारना है इस नॉलेज से। जीवन हीरे जैसा बनाओ। बच्चे प्रदर्शनी आदि में होका(सहयोग) भी देते हैं, जिनके भाग्य में नहीं है उनसे तो कुछ पहुँचता ही नहीं है, और बच्चों को प्रैक्टिस भी डालनी चाहिए। बाप की याद में भोजन बनाना है। जैसे कृष्ण को बहुत प्रेम से याद करते हैं। वह है अटल नौधा भक्ति। ज्ञान से तो सद्गति होती है। वह तो सामने कृष्ण ही देखते रहेंगे। उनसे मेहनत नहीं होती। सिर्फ

खुश रहते हैं। यह है निरंतर याद करने का ज्ञान। पतित से पावन बनाने वाला कोई नहीं है। बाप ने समझाया है क्रियेटर है ही दो। एक तो लौकिक बाप, दूसरा है पारलौकिक बाप। इनको (ब्रह्मा) को क्रियेटर नहीं कहेंगे। तुम शिवबाबा के बने हो। उनसे बेहद का वर्सा मिलता है। तीसरा कोई है नहीं। बाप तुमको एडॉप्ट करते हैं ब्रह्मा द्वारा। इसमें मूँझना नहीं होता है। सगीर बच्चों को तो गवर्मेंट अलाउ नहीं करेगी। बाकी इसमें गवर्मेंट को इन्टरफेयर करने की दरकार नहीं। बाप को बहुत ही प्यार से याद करना होता है। प्यार में आँसू भी आते हैं। ऐसे बाबा का ऐसा प्यार जो और कोई याद न आये। ऐसा पुरुषार्थ करना होता है। शिवबाबा की याद हो और स्वदर्शन चक्र फिरता हो तब प्राण तन से निकले। यह है अंतिम मंत्र। वशीकरण मंत्र। रावण पर विजय पाने का मंत्र। बहुत हैं तो मतभेद में भी आकर पढ़ाई छोड़ देते हैं। तो अपना ही नुकसान करते हैं। तकदीर को लकीर लगाते हैं। समझा जाता है कल्प–कल्प ऐसे ही तकदीर को लकीर लगाये नापास हो जावेंगे। यह है भी छी–छी दुनिया। इसमें रहने दिल नहीं होती। दिन–प्रतिदिन वैश्यालय की रसम पड़ती जा रही है। साहुकार लोग तो दो–दो औरत रखते हैं। कितना गंद है, बात मत पूछो। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडनाइट और नमस्ते।